शुभ 2021

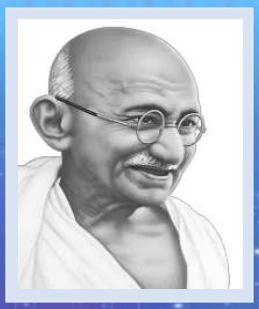

समाचार पत्र

द रुरल कनेक्ट

खंड 7 अंक 1 जनवरी 2021 www.mgncre.org

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद
Mahatma Gandhi National Council of Rural Education
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

"सभी शिक्षा का अंत निश्चित रूप से सेवा होना चाहिए। सामुदायिक सेवा के कार्यक्रमों में छात्रों की भागीदारी के माध्यम से सामाजिक जागरूकता और जिम्मेदारी को विकसित किया जा सकता है" महात्मा गांधी

"मिश्रित शिक्षा नए सामान्य बनेंगे" - श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', केंद्रीय शिक्षा मंत्री

कई ऑनलाइन कार्यक्रमों में संबोधित करते हुए, केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल ने नई शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताओं पर जोर दिया। हालांकि अप्रत्याशित आगमन एक वैश्विक महामारी दुर्भाग्यपूर्ण है, पूरा देश इसमें एक साथ है और सरकार नई सामान्य' स्थिति में अथक प्रयास कर रही है। शिक्षा का ऑनलाइन मोड कोविड -19 महामारी के साथ अलोप नहीं होगा। सरकार ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा के मिश्रण को प्राथमिकता देगी। शिक्षा मंत्रालय ने सांकेतिक समय तैयार करने के लिए परामर्श कार्यशालाओं का आयोजन किया है, और क्रियान्वयन कार्य सूचियों को समयबद्ध और आउटपुट के साथ मसौदा तैयार करना है। इस बीच उच्चतर शिक्षा में, सुधारों की एक श्रृंखला की जाएगी जैसे कि क्षेत्रीय भाषाओं को निर्देश के सांकेतिक समय तैयार करने के लिए परामर्श कार्यशालाओं का आयोजन किया है, और क्रियान्वयन कार्य सूचियों को समयबद्ध और आउटपुट के साथ मसौदा तैयार करना है। इस बीच उच्चतर शिक्षा में, सुधारों की एक श्रृंखला की

जाएगी जैसे कि क्षेत्रीय भाषाओं को निर्देश के माध्यम के रूप में पेश करना, कई प्रविष्टियों के साथ बहु-विषयक पाठ्यक्रम चलाना और बाहर निकलने के विकल्प और शैक्षणिक बैंकों का गठन। आई.सी.टी. सुविधाओं और डिजिटल शिक्षा को स्कूल और उच्चतर क्षा दोनों में जबूत किया जाएगा। यह कहते हुए कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के ब्रांड एंबेसडर छात्र हैं, उन्होंने नीति को सफल बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने पर जोर दिया। उन्होंने नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में छात्रों और शिक्षकों के सहयोग की मांग की। जबकि शिक्षा इस परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, प्रौद्योगिकी शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत, एक स्वायत्त निकाय, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम (एन.ई.टी.एफ.), दोनों स्कूल के लिए सीखने, मूल्यांकन, नियोजन, प्रशासन और उच्चतर शिक्षा को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विचारों के मुक्त आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए बनाया जाएगा। किसी भी छात्र पर कोई भाषा नहीं लगाई जाएगी, लेकिन सक्षम प्रावधान बनाए जाने चाहिए, ताकि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न होने के कारण उज्ज्वल छात्र तकनीकी शिक्षा से वंचित नहीं," उन्होंने कहा।

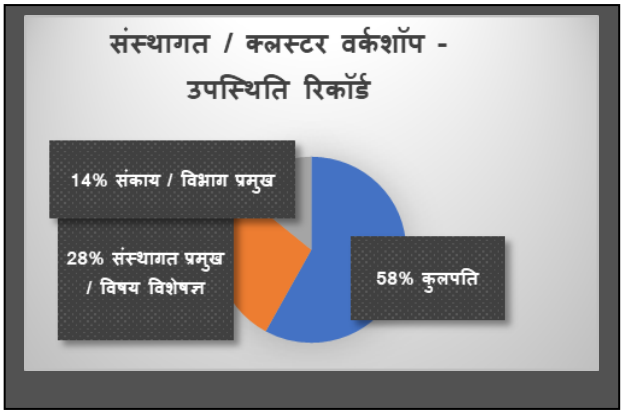

सस्थागत और क्लस्टर कार्यशालाए

व्यावसायिक शिक्षा-नई तालीम-अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.एल.)
सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता एवं ग्रामीण कार्य कोशिकाओं (एस.ई.एस.आर.ई.सी.)
ग्रामीण उद्यमिता विकास कोशिकाओं (आर.ई.डी.सी.) / एफ.पी.ओ. / पांचवें वेतन आयोग-बिजनेस स्कूलों कनेक्ट कोशिकाओं (एफ.बी.एस.सी.) - **कुल कार्यशालाएं दिसम्बर 2020 तक**

प्रयास को संस्थागत बनाने के लिए गठित सेल!

संस्थागत कार्यशालाएं	कार्यशालाएं	कार्य योजनाएं	प्रतिभागी
व्यावसायिक शिक्षा	689	32056	33505
सामाजिक उद्यमिता	325	2714	16007
ग्रामीण प्रबंधन	620	7959	27357
कुल	1634	42729	76869
क्लस्टर कार्यशालाएं			
व्यावसायिक शिक्षा	280	3662	9096
सामाजिक उद्यमिता	80	2260	2737
ग्रामीण प्रबंधन / आर.ई.डी.सी. / एफ.बी.एस.सी.	460	2751	7294
कुल	820	8673	19127

भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों का 25% कार्य

अच्छा काम जारी है! योगदान कार्रवाई में जुटाव! अच्छे महीने में अच्छा रहो! **27 दिसंबर 2020 – 26 जनवरी 2021** उच्चतर शिक्षा संस्थानों में सेल के घठन के लिए अद्भूत सफलता के बाद एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने अब एक सेल संघटन के लिए महीना में अंशदान किया जा रहा है

"एस.ई.एस. आर.ई.सी. विवेक सुभाषितम" कोशिकाओं के लिए अच्छा रहो, अच्छा महीना रखो

व्यापार के साथ और सामाजिक उद्यमिता कार्य योजना में "वी.ई.एन.टी.ई.एल. विवेक सुभाषितम" के लिए अच्छा महीना अच्छा है। "आर.ई.डी.सी. विवेक सुभाषितम कार्य योजना में व्यक्तिगत रूप से अच्छे और समुदाय वार अच्छा करना है।

प्रत्येक सेल के छात्र इस महीने में 50 गतिविधियां करेंगे और उन्हें निष्पादित करेंगे।

संपादक की टिप्पणी

चुनौतियों में से सबसे बड़ी - व्यक्तिगत और पेशेवर, एम.जी.एन.सी.आर.ई. 'परिवार' ने पूरे भारत के 25% से अधिक उच्च शैक्षणिक संस्थानों को प्रभावित करने वाले परिणाम आधारित कार्यक्रमों की दिशा में काम करने में महान व्यावसायिकता दिखाई है।

प्राथमिकताओं में सुरक्षा और लचीलापन है। कोविड 19 महामारी के आँकड़ों के पीछे दर्द और नुकसान की व्यक्तिगत कहानियाँ हैं। मेरी गहरी सहानुभूति उन सभी के साथ है जो सीधे प्रभावित हुए हैं और मैं सभी स्वास्थ्य कर्मियों, सरकारी अधिकारियों, और नागरिकों को अग्रिम तर्ज पर आने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। जिस तरह से कर्मचारियों ने बदले हुए परिदृश्य - न्यू नॉर्मल को अपने काम के माहौल में सफलतापूर्वक अनुकूलित किया है, उससे मैं संतुष्ट हूँ ।

सभी कर्मचारियों द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों में सबसे ज्यादा मायने रखता है। संकट की गर्मी में, संक्रमण केंद्रित और सुचारू था, हमारे कर्मचारियों ने राउंड टेबल, कार्यशालाएं, संकाय विकास कार्यक्रम और कई सलाहकार वेबिनार के संचालन के लिए 'डिजिटल प्लेटफार्मों' और प्रौद्योगिकी की ओर रुख किया। महामारी ने हमें सिखाया है कि समान और शायद और भी अधिक जिम्मेदारी के साथ घर से काम कैसे किया जा सकता है। कोविड 19 ने वैश्विक शिक्षा को प्रभावित किया है लेकिन इसने उच्च शिक्षा संस्थानों को विभिन्न सामाजिक नेटवर्क प्लेटफार्मों का उपयोग करके शिक्षण और सीखने के डिजिटल मोड को मिश्रित करने के लिए पारंपरिक प्रणाली से एक विवर्तनिक बदलाव करने के लिए मजबूर किया है।

स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.) के हिस्से के रूप में, विश्वविद्यालय क्षेत्राधिकार के तहत संबद्ध और संबद्ध संस्थानों के निदेशकों / प्रमुखों / प्रमुखों ने स्वच्छता कार्य योजना ऑनलाइन कार्यशालाओं में भाग लिया और राज्य और देश में स्वच्छ भारत को विकसित करने में योगदान दिया। 22 संकाय विकास कार्यक्रम, 764 प्रतिभागियों, 303 कार्यशालाओं के साथ 9012 प्रतिभागियों के साथ आयोजित किए गए थे। 1350 एस.ए.पी. समितियों का गठन एस.ए.पी. के काम का शानदार परिणाम था।

व्यावसायिक शिक्षा पर हमारी कार्यशालाएँ -नई तालीम - अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.ई.एल.) ने देश भर में उत्साह इकट्ठा की है। कार्यशाला के बाद, संस्थानों में एक वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना समिति होगी जो अपने संबंधित संस्थानों में वी.ई.एन.टी.ई.एल. गतिविधियों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करेगी। 35718 कार्य योजनाएँ बनाई गईं।

ग्रामीण उद्यमिता विकास (आर.ई.डी.) गतिविधियों को एक संस्थागत पहचान प्रदान करने के लिए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ग्रामीण उद्यमिता विकास सेल (आर.ई.डी.सी.) की स्थापना के लिए पूरे भारत में उच्च शैक्षणिक संस्थानों को प्रोत्साहित कर रहा है। आर.ई.डी.सी. की भूमिका ग्रामीण उद्यमों के साथ इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता प्रदान करना है, ग्रामीण उद्यमिता शुरू करना, ग्रामीण निर्माताओं के साथ नेटवर्क तैयार करना, ग्रामीण तकनीकी हस्तक्षेप विकसित करना और छात्रों को उनके मन में उद्यमिता की भावना को उभारकर ग्रामीण उद्यमी बनना है। 10710 कार्य योजनाएँ बनाई गई। सुविधाओं और विशेषज्ञता को साझा करके ग्रामीण प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आपसी संबंधों की खोज, विस्तार और मजबूती के लिए - कई विश्वविद्यालयों / उ.शि.सं. के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किया गया है।

उच्च शिक्षा संस्थानों में सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण कार्य संबंधी गतिविधियों पर हमारी कार्यशालाओं ने लाभांश का भुगतान किया है और मंत्रालय द्वारा उ.शि.सं. की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को बहुत सराहा गया है।

हम सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण कार्य सेल के माध्यम से पिछले साल शुरू किए गए कार्य की निरंतरता और स्थिरता का निर्माण कर रहे हैं। 4974 कार्य योजनाएं बनाए गए।

गांधीजी की नई तालीम में एम.जी.एन.सी.आर.ई. के हस्तक्षेप - अनुभवात्मक शिक्षा को यू.एन.ई.एस.सी.ओ. (यूनेस्को) चेयर के लिए मान्यता दी गई है और अनुमोदित किया गया है। यह परियोजना यू.एन.ई.एस.सी.ओ. (यूनेस्को) चेयर द्वारा निर्धारित मानदंडों को पूरा करती है, ग्रामीण समुदाय के जुड़ाव, कार्य शिक्षा और शिक्षक शिक्षा और स्कूली शिक्षा में अनुभवात्मक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान, प्रशिक्षण, सूचना और प्रलेखन गतिविधियों के माध्यम से उच्च शिक्षा और अनुसंधान संस्थानों की क्षमता बढ़ाने के कार्यक्रम।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. 40 देशव्यापी क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (आर.सी.आई.) में से एक है और यू.बी.ए. के लिए तेलंगाना राज्य में तीन आर.सी.आई. में से एक है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने एक आर.सी.आई. के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया है जिसमें स्वैच्छिक कार्यशालाएं, गाँव की गतिविधियाँ, पी.आर.ए., पी.एल.ए., ग्रामीण तल्लीनता कार्यक्रम और कई छात्र-गाँव गतिविधि कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसे अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। यू.बी.ए. के माध्यम से सतत विकास की प्रक्रिया रिवर्स माइग्रेशन की गुंजाइश देते हुए ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में लोगों के प्रवास की समस्या की जांच करने में मदद करेगी। छात्र समुदाय से अपेक्षा की जाती है कि वह कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का बीड़ा उठाए ताकि इसे राष्ट्रीय आंदोलन बनाया जा सके।

हम बहुमुखी प्रतिभा और चपलता के साथ 2020 की प्रतिकूलता को पूरा कर चुके हैं। एम.जी.एन.सी.आर.ई. में हमारे द्वारा अनुभव किए गए सबसे अप्रत्याशित वर्ष में, हमारे संगठन की लचीलापन और हमारे कर्मचारियों का भाग्य लगातार चमक रहा है। नतीजतन, हम पर्याप्त वृद्धि के लिए अच्छी तरह से तैनात हैं क्योंकि हम अपने अवसरों के निष्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हम नए दशक की शुरुआत एक स्थापित आधार के साथ करते हैं जो हमारी संगठनात्मक ताकत के लिए महत्वपूर्ण है। 2020 के करीब आने के साथ, इस बिंदु पर जो कुछ किया गया है, उस पर परिप्रेक्ष्य होना जरूरी है, साथ ही काफी अवसर भी आगे बढ़ सकते हैं। एम.जी.एन.सी.आर.ई. के कर्मचारियों ने अनिश्चितता की स्थिति में असाधारण लचीलापन का प्रदर्शन किया है और हमें अपनी नई चुनौतियों को संचालन करने की अपनी क्षमता पर भरोसा है जो आगे बढ़ने पर उत्पन्न हो सकती हैं।

मैं एम.जी.एन.सी.आर.ई. के नए सदस्य सचिव के रूप में डॉ. टी नागलक्ष्मी का बोर्ड में दिल से स्वागत करता हूं। उनके गहन अनुसंधान ज्ञान और शैक्षिक हस्तक्षेप में विशेषज्ञता हमारे संगठन को अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करने में मदद करने वाली है!

मैं स्वास्थ्य, खुशी और शांति से भरे शानदार दशक की कामना करता हूं।

डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.

सभी के लिए एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ नव वर्ष की शुभकामनाएं 2021!

कार्य करने के एजेंडे को ध्यान में रखते हुए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने बदलते समय के साथ खुद को अच्छी तरह से अनुकूलित किया है। प्रभावी ढंग से काम करने के लिए डिजाइन के साथ मैचिंग इच्छा - सफलता के लिए मंत्र रहा है।

पहली बार ऑनलाइन संकाय विकास कार्यक्रम और कार्यशालाओं की शानदार सफलता सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है और उनके तार्किक परिणाम सामने आए है। एजेंडा पर सामाजिक जिम्मेदारी और संस्थागत परामर्श को बढ़ावा दिया गया है। देश भर में 500 से अधिक प्रतिभागियों के साथ सबसे बड़ा ऑनलाइन संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया था। भारतीय उच्च शैक्षणिक संस्थान विविध हैं और दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा माना जाता है। इन संस्थानों के लाखों छात्रों, संकायों और कर्मचारियों की सामाजिक जिम्मेदारी के एक हिस्से के रूप में उनकी भूमिका जहां कहीं भी स्थित है, सामुदायिक विकास के प्रति है। संकट के समय में, उदाहरण के लिए, वर्तमान कोविड 19 महामारी परिदृश्य में, उ.शि.सं. को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के लि

मैं एम.जी.एन.सी.आर.ई. के नए सदस्य सचिव के रूप में डॉ. टी नागलक्ष्मी का स्वागत करता हूं।

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.

एम.जी.एन.आर.ई. ने डॉ. टी. नागलक्ष्मी, सदस्य सचिव का स्वागत किया

डॉ. टी. नागलक्ष्मी ने सदस्य सचिव के रूप में एम.जी.एन.सी.आर.ई. में शामिल होने से पहले वह इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड कॉमर्स में वाइस-प्रिंसिपल (एकेडमिक्स) के रूप में कार्य किया। डॉ. टी. नागलक्ष्मी, डॉ. बी.आर.ए.ओ विश्वविद्यालय से कॉमर्स में डॉक्टरेट के धारक होने के कारण, शिक्षाविदों और अनुसंधान में 18 वर्षों का गहरा अनुभव है। उन्हें कार्यशालाएं, संकाय विकास कार्यक्रम और सेमिनार आयोजित करने में विशेषज्ञता हासिल है। उन्हें 2014 में बेस्ट फैकल्टी का पुरस्कार मिला। कॉलेजिएट एजुकेशन निदेशालय ने उनके प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्हें 'अच्छा शोध ज्ञान रखने वाले संगठन की सच्ची संपत्ति' के रूप में बताया हैं। वह उत्कृष्ट परामर्श और संचार कौशल के साथ-साथ शिक्षाविदों के विकास के लिए उपयुक्त योजनाओं को विकसित करने और उन्हें लागू करने में विशेषज्ञता रखती है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और पाठ्य पुस्तकों में प्रकाशित किया है और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में कागजात प्रस्तुत किए हैं।

ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ (आर.ई.डी.सी.)
एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी.- बिजनेस स्कूल कनेक्ट सेल (एफ.बी.एस.सी.)

प्लेसमेंट सेल के रूप में उद्यमिता को बढ़ावा देने वाला एक सेल आवश्यक है। इस संबंध में, हम प्रबंधन और व्यावसायिक स्कूलों के कॉलेजों के लिए ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ (आर.ई.डी.सी.) / एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. -बिजनेस स्कूल्स कनेक्ट सेल (एफ.बी.एस.सी.) पर ऑनलाइन कार्यशालाएँ आयोजित कर रहे हैं। ग्रामीण उद्यमिता विकास (आर.ई.डी.) गतिविधियों सहित विभिन्न पथ-प्रदर्शक गतिविधियों में एम.जी.एन.सी.आर.ई. अग्रणी है। गाँधी जी के विचारों और ग्राम स्वराज भारत में ग्राम आर्थिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया। उनके विचारों को वास्तविकता में लाने के लिए हम ग्रामीण उत्पादों और ग्रामीण सेवाओं के विनिर्माण और विपणन में उद्यमिता के अवसरों को बढ़ावा दे रहे हैं और आत्मनिर्भरता के लिए उद्यमिता के कला और शिल्प के मॉडल की खोज कर रहे हैं। उद्यमिता सीखने के माध्यम से प्रबंधन शिक्षा का उद्देश्य अच्छी तरह से महसूस किया जाता है। उद्यमिता का मार्गदर्शक सिद्धांत है "शिक्षा और कार्य को अलग नहीं किया जा सकता है और कार्य, अनुसंधान, योगदान, रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच कौशल के बिना, हम नया ज्ञान नहीं बना सकते हैं"।

ग्रामीण उद्यमिता विकास (आर.ई.डी.) गतिविधियों को एक संस्थागत पहचान प्रदान करने के लिए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ग्रामीण उद्यमिता विकास सेल (आर.ई.डी.सी.) की स्थापना के लिए पूरे भारत में उच्च शैक्षणिक संस्थानों को प्रोत्साहित कर रहा है। आर.ई.डी.सी. की भूमिका ग्रामीण उद्यमों के साथ इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता प्रदान करना है, ग्रामीण उद्यमिता शुरू करना, ग्रामीण निर्माताओं के साथ नेटवर्क तैयार करना, ग्रामीण तकनीकी हस्तक्षेप विकसित करना और छात्रों को तैयार करने को उनके मन में उद्यमिता की भावना को उभारकर ग्रामीण उद्यमी बनना है।

कार्यशालाओं का उद्देश्य ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ (आर.ई.डी.सी.) का गठन करना है; परिसर में छात्रों के बीच ग्रामीण उद्यमिता संस्कृति को बढ़ावा देने के तरीके साझा करना; आर.ई.डी.सी. की संकाय टीम की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर चर्चा करने के लिए; और आर.ई.डी.सी. गतिविधियों के लिए आगे बढ़ने के तरीके को बढ़ावा देना। इस संबंध में, एम.जी.एन.सी.आर.ई. संस्थानों के समूह बनाकर देश के कई राज्य विश्वविद्यालयों से संबद्ध प्रबंधन और बिजनेस स्कूलों के कॉलेजों के साथ आर.ई.डी.सी. पर ऑनलाइन कार्यशालाओं का आयोजन करता है। हम एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी.-बिजनेस स्कूल कनेक्ट सेल (एफ.बी.एस.सी.) का संचालन करे रहे हैं, जहां हम एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. के साथ जुड़ रहे हैं। छात्रों को ग्रामीण उद्यमिता विकास के तीन महत्वपूर्ण चरणों के माध्यम से जाना जाता है, यानी इंटर्नशिप, शिक्षुता, और उद्यमिता में समापन। शिक्षा को ग्रामीण उद्योग के साथ जोड़कर, हम ग्राम स्वराज के एक सतत विकास मॉडल को प्राप्त कर सकते हैं और राष्ट्र की भलाई के लिए छात्रों का पोषण कर सकते हैं।

एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी.-बिजनेस स्कूल कनेक्ट (एफ.बी.एस.सी.) सेल का गठन और इसे उच्च शैक्षणिक संस्थानों से जोड़ना एक साथ कार्य और शिक्षा के संबंध में पहला कदम है। एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. की व्यावहारिक चुनौतियों को केस स्टडी के रूप में प्रबंधन पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाया जाएगा, जो छात्रों को व्यावहारिक प्रदर्शन देता है, जबकि संकाय और छात्रों द्वारा प्रदान किए गए समाधान एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेंगे। दोनों पक्षों के लिए एक जीत-जीत स्थिति। इस अवधारणा को वास्तविकता में लाने के लिए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. अपनी आवश्यकताओं को समझने और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार पेशेवर मदद का विस्तार करने के उद्देश्य से एफ.पी.ओ. /एफ.पी.सी.s के लिए कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा है। अपने सी.ई.ओ. द्वारा एफ.बी.एस.सी. सेल लीड का गठन कार्यशाला का हिस्सा बनने के लिए शर्त है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने उत्पाद विपणन रणनीतियों, भवन नेटवर्क और तकनीकी उन्नयन जैसे कुछ क्षेत्रों की पहचान की है, जहां एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. द्वारा पेशेवर मदद की आवश्यकता है। एफ.बी.एस.सी. सेल छात्रों से पेशेवर मदद लेने के लिए बी-स्कूलों के बी.बी.ए. / एम.बी.ए. स्नातकों के लिए इंटर्नशिप / अप्रेंटिसशिप की पेशकश करेगा। एफ.बी.एस.सी. कार्यशालाओं का उद्देश्य एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी. की चुनौतियों और चिंताओं को समझना और उन्हें व्यावसायिक सहायता प्राप्त करने के लिए आस-पास के व्यवसाय प्रबंधन स्कूलों के साथ जोड़ना है। ये स्कूल बी.बी.ए. / एम.बी.ए. के छात्रों को इंटर्न के रूप में ले सकते हैं ताकि उनकी कुछ चिंताओं को परियोजनाओं के माध्यम से संबोधित किया जा सके और एक पारस्परिक रूप से लाभकारी संघ हो सके। सुविधाओं और विशेषज्ञता को साझा करके ग्रामीण प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आपसी संबंधों की खोज, विस्तार और मजबूती के लिए- कई विश्वविद्यालयों / उ.शि.सं. के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ (आर.ई.डी.सी.) एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी.- बिजनेस स्कूल कनेक्ट सेल (एफ.बी.एस.सी.) कार्यशालाएं दिसंबर 2020

आर.एम./आर.ई.डी. सेल कार्यशालाएं	373
प्रतिभागी	6464
आर.ई.डी. सेल	2115
एफ.बी.एस.सी. कार्यशालाएं	87
प्रतिभागी	830
एफ.बी.एस.सी. सेल	636
आर.एम./आर.ई.डी. संस्थागत कार्यशालाएं	620
प्रतिभागी	27357
बिजनेस योजना	7959

कश्मीर विश्वविद्यालय में एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम! विशेषज्ञ जम्मू-कश्मीर, लद्दाख के अकादमिक संस्थानों में पाठ्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हैं ... "छात्रों को अधिक रोजगारपरक बनाने के लिए जम्मू-कश्मीर में एम.बी.ए. (ग्रामीण प्रबंधन) शुरू करने की बहुत गुंजाइश है। इसे एक पूर्ण पाठ्यक्रम के रूप में या मौजूदा एम.बी.ए. कार्यक्रमों में विशेषज्ञता के एक क्षेत्र के रूप में पेश किया जा सकता है, जो विपणन जैसे प्रमुख प्रबंधन क्षेत्रों के बारे में ग्रामीण स्थानों में जागरूकता बढ़ाने में योगदान कर सकते हैं, **"के.यू. के प्रो. एस. मुफीद अहमद डीन स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज** ने कहा। उन्होंने एम.जी.एन.सी.आर.ई. से आग्रह किया कि वह जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के संघ शासित प्रदेशों में ग्रामीण प्रबंधन के मुद्दों का अध्ययन करें। दिन भर की कार्यशाला का आयोजन वर्सिटी स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज (एस.ओ.बी.एस.) के सहयोग से किया गया था। डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. , निदेशक ग्रामीण प्रबंधन प्रो. चेतन चित्तलकर, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय से प्रो. आरती गौड़, और लेह से सुश्री. अभिलाषा बहुगुणा, एम.जी.एन.सी.आर.ई. से कुमार अभिषेक द्वारा समन्वित कार्यशाला-सह-जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य संसाधन व्यक्ति थे।

प्रगति में ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम विकास कार्यशालाएं

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन प्रबंधन विभाग, जी.जी.एस. आई.पी.यू., नई दिल्ली और इसके संबद्ध कॉलेजों के संकायों के लिए किया गया था।

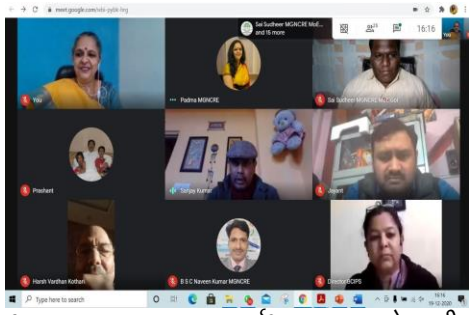

आर.एम. पाठ्यक्रम कार्यशाला - जे.एन.टी.यू., अनातपुरम 30 प्रतिभागी - निदेशक शैक्षणिक और योजना प्रो. एस.वी. सत्यनारायण और प्रो. एम.एल.एस. देव कुमार, निदेशक, प्रबंधन अध्ययन का संबोधन

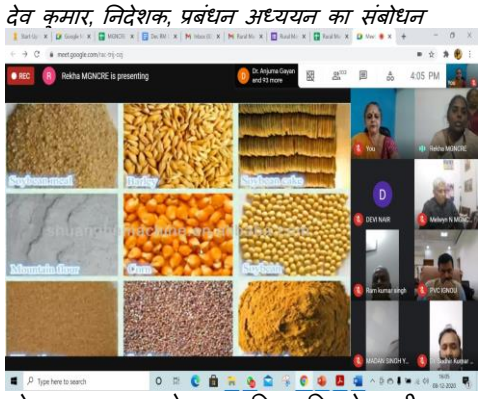

प्रो. सत्यनारायण ने साझा किया कि जे.एन.टी.यू.ए. ने फूड टेक्नोलॉजी लैब की स्थापना की है और अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों को भी अपनाया है। उन्होंने कहा कि आर.एम. कार्यक्रम को बी.टेक. छात्रों के लिए एक मामूली कार्यक्रम के रूप में पेश किया जा सकता है। प्रो. देव कुमार ने कहा कि आर.एम. पाठ्यक्रम समय की जरूरत है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले प्रौद्योगिकी स्नातकों को उन क्षेत्रों में आजीविका प्राप्त करने में मदद मिल सकती है जिसमें वे रहते हैं और आर.एम. पाठ्यक्रम करने के बाद किसानों का समर्थन भी कर सकते हैं।

उद्यमिता से जुड़े होने से पहले ग्रामीण विकास पहले से कहीं अधिक है। ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने वाले संस्थान और व्यक्ति अब उद्यमिता को एक रणनीतिक विकास हस्तक्षेप के रूप में देखते हैं जो ग्रामीण विकास को गति दे सकता है।

भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार: आर.एम. पाठ्यक्रम कार्यशाला

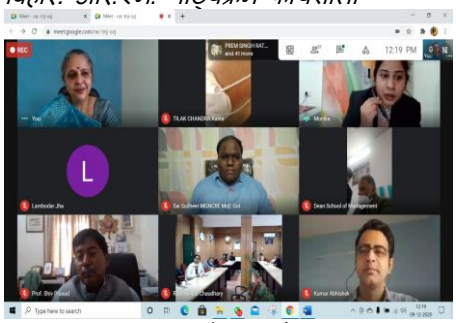

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन व्यवसाय प्रशासन विभाग, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, और दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के संकाय सदस्यों के लिए किया गया था। मुख्य वक्ता, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के माननीय डीन डॉ. सैयद हैदर अली ने पाठ्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण प्रबंधन के क्षेत्र में शुरू किए गए प्रयासों की सराहना की।

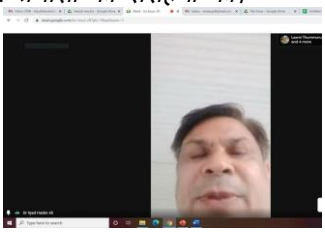

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश के संकाय सदस्यों के लिए किया गया था। मुख्य वक्ता, माननीया डीन प्रो. श्वेता आनंद ने अपने संबोधन में देश के विकास में ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

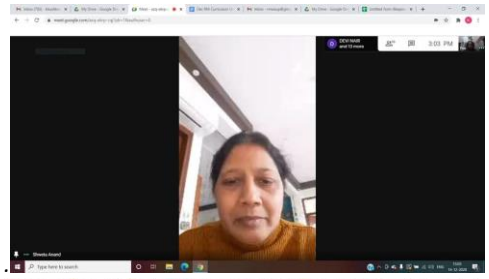

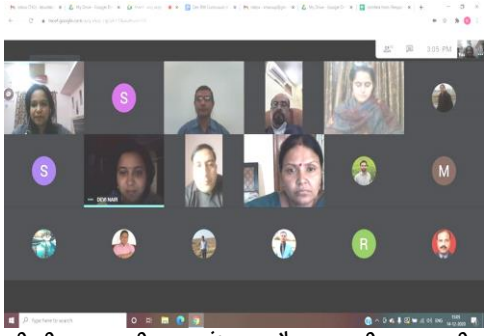

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन मानविकी और प्रबंधन विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के संकाय सदस्यों के लिए किया गया था। मुख्य वक्ता माननीय डीन डॉ. सुधीर नारायण सिंह ने अपने संबोधन में ग्रामीण उद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण विकास और प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला।

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला वाणिज्य और प्रबंधन अध्ययन विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम के संकाय के लिए आयोजित की गई थी।

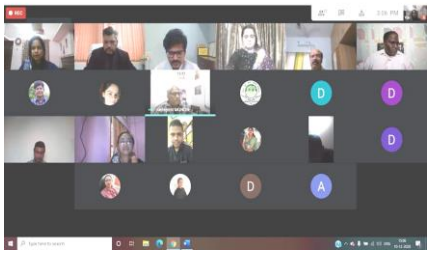

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला वाणिज्य और प्रबंधन अध्ययन विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची के संकाय के लिए आयोजित की गई थी

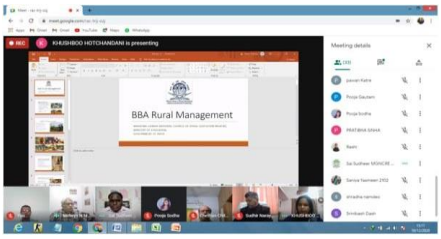

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला वाणिज्य और प्रबंधन अध्ययन विभाग, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची के संकाय के लिए आयोजित की गई थी।

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला वाणिज्य और प्रबंधन अध्ययन विभाग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला वाणिज्य और प्रबंधन अध्ययन विभाग, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा के लिए आयोजित की गई थी।

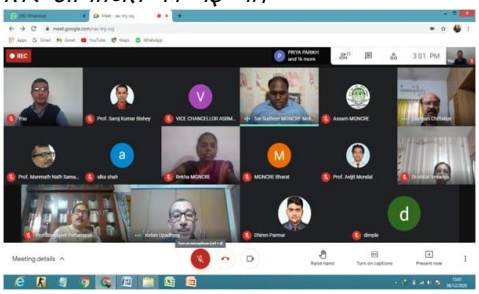

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला एच.पी.एन.एल.यू. - शिमला के शिक्षाविदों के लिए आयोजित की गई थी। मुख्य वक्ता माननीय कुलपति प्रो. डॉ. निष्ठा जसवाल ने ग्रामीण विकास में कानूनी साक्षरता, कौटिल्य की प्रासंगिकता, अंतः विषय शिक्षा डोमेन और मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने भी भाग लिया और बहुमूल्य जानकारी दी।

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला प्रबंधन और वाणिज्य विभाग, आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश और इसके संबद्ध संस्थानों के लिए आयोजित की गई थी।

बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और एम.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम की शुरूआत पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन बिजनेस प्रशासन विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय और संबद्ध कॉलेजों के संकाय सदस्यों के लिए किया गया था।

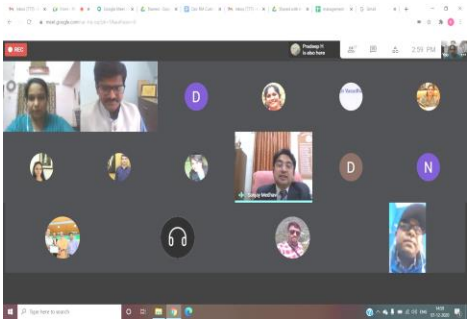

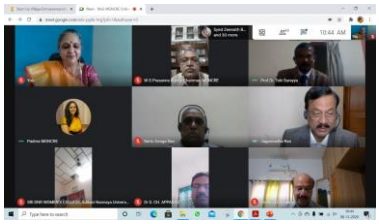

भारत में सूर्य का स्थान अपने ग्रामीण लोगों के ज्ञान और अपने पेशेवरों के कौशल के बीच साझेदारी से आएगा - वर्गीज कुरियन

व्यावसायिक शिक्षा-नई तालीम-अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.ई.एल.) कार्यशालाएं

"व्यावसायिक शिक्षा-नई तालीम-अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.ई.एल.) कार्य योजना 'पर हमारे एक दिवसीय ऑनलाइन संस्थागत कार्यशालाओं ने आर्थिक मूल्य के लिए उत्पादक कार्य के साधन के रूप में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता के लिए आवश्यक प्रोत्साहन और 4 पद्धतियों के साथ इसके एकीकरण का निर्माण किया है- विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन और भाषा। ये कार्यशाला वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना के चार चिन्हित क्षेत्रों में गतिविधियों के लिए कार्य योजना तैयार करने का आधार रहा है - व्यावसायिक शिक्षा, आत्मनिर्भरता, स्वच्छ और स्वास्थ्य और सामुदायिक / क्षेत्रीय कार्य। कार्यशाला के बाद, संस्थानों में एक वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना समिति जो अपने संबंधित संस्थानों में वी.ई.एन.टी.ई.एल. गतिविधियों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करेगी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कार्य और शिक्षा को अलग-अलग संस्थाओं के रूप में मानती है जिसके परिणामस्वरूप एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई जो व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा पर केंद्रित है। पिछले कुछ वर्षों से, एम.जी.एन.सी.आर.ई. अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है और शिक्षा कॉलेजों के संकाय के लिए कई एफ.डी.पी. और कार्यशालाएं आयोजित की है।

वी.ई.एन.टी.एल. कार्यशालाएं एम.जी.एन.सी.आर.ई. के हस्तक्षेपों की उ.शि.सं. में चर्चा करती हैं; वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना; एक शिक्षण पद्धति के रूप में व्यावसायिक शिक्षा; और वी.ई.एन.टी.ई.एल. राष्ट्रीय प्रतियोगिता भागीदारी विवरण। प्रतिभागी छात्र - कॉलेजों के शिक्षक अपने संस्थान में वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना सेल के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए उन्मुख हैं; वे 4 वी.ई.एन.टी.ई.एल. क्षेत्रों के बारे में जानते हैं, जिनके लिए उन्हें गतिविधियाँ करने की आवश्यकता है; छात्र शिक्षक के लिए वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य योजना राष्ट्रीय प्रतियोगिता के चरणों और जमा करने के दिशानिर्देशों से अवगत हो जाएं; अपने पाठ्यक्रम और स्कूल के पाठ्यक्रम में वी.ई.एन.टी.ई.एल. गतिविधियों को एकीकृत करने के मूल्य को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं; उन नवीन गतिविधियों को साझा करें जो वे व्यावसायिक शिक्षा, स्व-शिक्षा, स्वच्छता / स्वास्थ्य और सामुदायिक सहभागिता से संबंधित हों; और वी.ई.एन.टी.ई.एल. में कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में जानते हैं।

वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्य के हिस्से के रूप में स्कूली बच्चे

व्यावसायिक शिक्षा-नई तालीम-अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.ई.एल.) कार्यशालाएं दिसंबर 2020

वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्यशाला		280
प्रतिभागी		9096
कार्य योजना सेल		3662
वी.ई.एन.टी.ई.एल. संस्थागत कार्यशालाएं		689
प्रतिभागी		33505
छात्र कार्य योजना		32056

एन.ई.पी. 2020 छात्रों को सशक्त बनाने और अधिक लचीलापन प्रदान करने के लिए था। यह विचार अकादमिक और व्यावसायिक धाराओं के बीच की खाई को पाटना है। छात्रों को इस या उस तक ही सीमित रहने की आवश्यकता नहीं है। नीति छात्रों को व्यावसायिक स्ट्रीम में अधिक से अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने के अवसर प्रदान करती है।

प्रगति में वी.ई.एन.टी.ई.एल. कार्यशाला

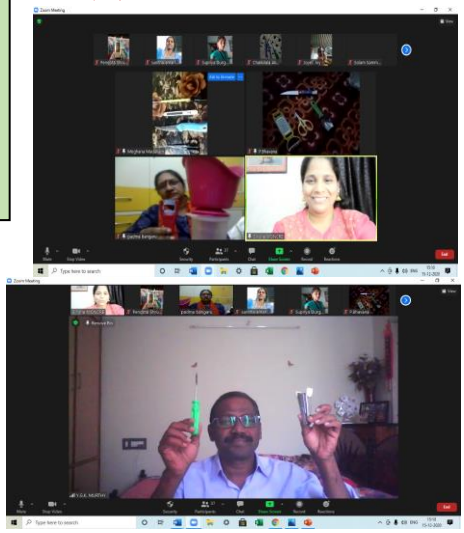

अनुभवात्मक शिक्षा और सामुदायिक जुड़ाव एम.जी.एन.सी.आर.ई. का पर्याय बन गया है! नई शिक्षा नीति 2020 के प्रचलन में आने के कारण यह सभी अधिक विश्वसनीयता का अनुमान है। नई तालीम के बारे में चेतना के निर्माण में हमारे प्रयास - गांधीजी की अनुभवात्मक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा के लिए आवश्यकता, शिक्षा प्रदान करते समय शाब्दिक भाषा का महत्व, कौशल -आधारित शिक्षा की आवश्यकता - आखिरकार दिन के प्रकाश के रूप में देखा गया है।

एन.ई.पी. 2020. एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने अनुभवात्मक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम विकसित किया था और सैकड़ों संकाय / पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम, मास्टर ट्रेनर विकास कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कीं और नई तालीम और सामुदायिक व्यस्तता की भावना को प्रज्वलित किया। हमने देश भर के स्कूलों और उ.शि.सं. को प्रभावित किया है और इससे हमें संतोष की अनुभूति होती है कि व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा आखिरकार दिन का क्रम बनने जा रही है।

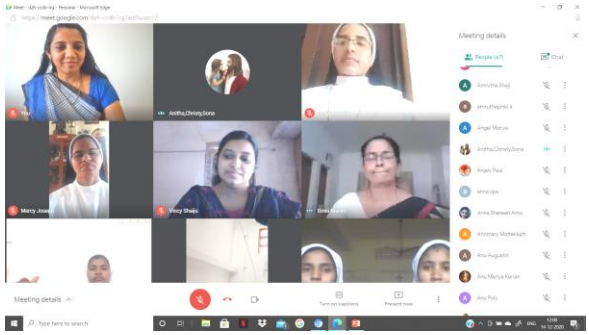

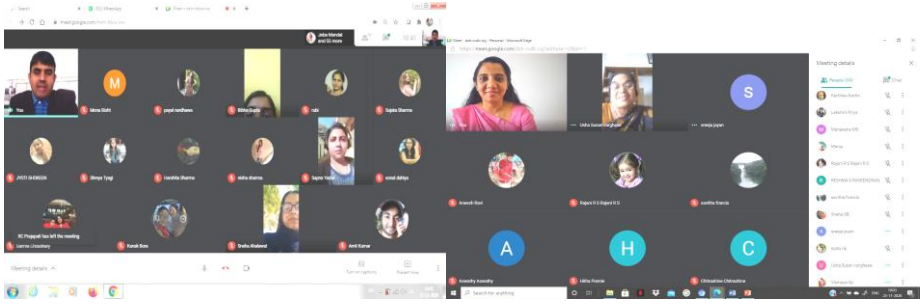

सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण कार्य सेल कार्य योजना सेल (एस.ई.एस.आर.ई.सी.)

सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण कार्य सेल कार्य योजना सेल (एस.ई.एस.आर.ई.सी.) कार्यशालाएं, स्वच्छता कार्यशालाएं और सामुदायिक सहभागिता की गतिविधियों का उपयोग करके सामाजिक उद्यम व्यवसाय योजना विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं सामाजिक उद्यमिता कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सी.एस.आर.) की व्यापक अवधारणा से भी भिन्न है, जिसका उद्देश्य आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने में व्यवसायों की सहायता करना है। सामाजिक उद्यमिता शिक्षा रणनीतिक रूप से सामाजिक परिवर्तन लाने पर ध्यान केंद्रित करती है और यह परिवर्तन का एक सामूहिक और संगठित आंदोलन है जो सामाजिक चुनौतियों के लिए स्थायी समाधान विकसित और वृद्धि करने की दिशा में काम करता है। यह देखते हुए कि उच्च शिक्षा संस्थानों को समाज में ज्ञान का संरक्षक माना जाता है, निहितार्थ शिक्षा प्रणाली में सामाजिक उद्यमिता बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण कार्य सेल कार्य योजना सेल (एस.ई.एस.आर.ई.सी.) दिसंबर 2020

एस.ई.एस.आर.ई.सी. कार्यशालाएं	80
प्रतिभागी	2737
कार्य योजना सेल	2260
एस.ई.एस.आर.ई.सी. संस्थागत कार्यशालाएं	325
प्रतिभागी	16007
व्यावसायिक योजनाएं	2714

इन मुख्य विचारों और अवधारणाओं को एक इंटरैक्टिव मोड में सीखा जाता है। सामाजिक उद्यमिता और नवीन सामाजिक परिवर्तन के विचार प्रतिभागियों से प्राप्त किए गए हैं। इसके अलावा, उ.शि.सं. और उनकी भूमिका का महत्व जिसमें सामाजिक उद्यमों, सेवाओं, और बुनियादी ढांचे (विशेष रूप से गांवों में) को मजबूत करने के लिए मानव संसाधनों के प्रावधान के माध्यम से उच्च-स्तरीय कौशल प्रशिक्षण को बढ़ाना शामिल है। यह बताना भारी है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण जुड़ाव संबंधी गतिविधियों पर हमारे कार्यशालाओं ने लाभांश का भुगतान किया है और मंत्रालय द्वारा उ.शि.सं. की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को बहुत सराहा गया है। हम सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण सगाई प्रकोष्ठों के माध्यम से पिछले साल शुरू किए गए कार्यों की निरंतरता और स्थिरता का निर्माण कर रहे हैं। सितंबर में आयोजित होने वाले विश्वविद्यालय स्तरीय कार्यशालाओं के सिलसिले में आयोजित होने वाली कार्यशालाओं के दूसरे चरण के रूप में आर.ई.डी. सेल का गठन करने वाले संस्थानों के लिए संस्थागत स्तर आर.ई.डी.सी. कार्यशालाएँ आयोजित की गई। उद्देश्यों को सेल की कार्यक्षमता और फरवरी 2021 में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तर की व्यावसायिक प्रतियोगिता के लिए प्रबंधन के छात्रों को तैयार करने के संदर्भ में परिभाषित किया गया था। जो छात्र उद्यमिता में रुचि रखते हैं, उन्हें निर्देशित किया गया था कि कैसे एक व्यवसाय योजना तैयार करें और इसे संकाय द्वारा कार्यान्वित करें। समन्वयक छात्रों को आत्मनिर्भर होने की दिशा में तैयार कर रहे हैं। ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठों (आर.ई.डी.सी.) एफ.पी.ओ. / एफ.पी.सी.-बिजनेस स्कूलों कनेक्ट सेल (एफ.बी.एस.सी.) पर कार्यशालाएं आर.ई.डी. सेल की कार्यक्षमता के उद्देश्यों के साथ आयोजित की जाती हैं; व्यवसाय योजना की तैयारी और कार्यान्वयन; और बिजनेस योजना प्रतियोगिता के लिए रास्ता मजबूत करना। कार्यशालाएं ग्रामीण उद्यमों के साथ 1. इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता पर ध्यान केंद्रित करती हैं। 2. ग्रामीण उद्यमिता की शुरुआत करना 3. ग्रामीण निर्माताओं के साथ नेटवर्किंग करना। 4. ग्रामीण प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपों का विकास करना और 5. छात्रों को ग्रामीण उद्यमी बनाना।

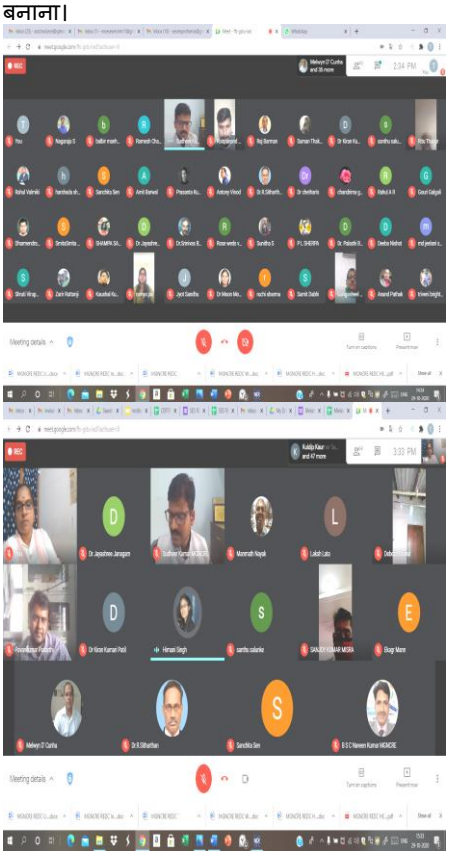

स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.)

स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.) के हिस्से के रूप में, विश्वविद्यालय क्षेत्राधिकार के तहत संबद्ध और संबद्ध संस्थानों के निदेशकों / प्राचार्यों / प्रमुखों ने स्वच्छता कार्य योजना ऑनलाइन कार्यशालाओं में भाग लिया और राज्य और देश में स्वच्छ भारत को विकसित करने में योगदान दिया। 5 स्वच्छता कार्य योजना (एस.ए.पी.) टीमों को उनके संस्थान में 5 संकाय सदस्यों के नेतृत्व में अलग-अलग पानी के लिए अलग से बनाकर स्वच्छता कार्य योजना को आगे बढ़ाने के लिए पंजीकरण प्रोफार्मा भर दिए गए; स्वच्छता; कचरा प्रबंधन; जल संरक्षण और ऊर्जा संरक्षण। स्वच्छ संस्थान होने के मानदंडों को पूरा करने और सर्वश्रेष्ठ जिला स्वच्छ संस्थान होने के लिए जिला स्तर पर प्रतियोगिता के लिए पात्र बनने के लिए मान्यता प्रमाण पत्र जारी किए गए थे। कार्य योजना का ध्यान परिसर और / या गोद लिए गए या लगे हुए गाँव था।

संकाय विकास कार्यक्रम 22
प्रतिभागी 764
कार्यशालाएँ 303
प्रतिभागी 9012
परिणाम - 1350 एस.ए.पी. समितियों का गठन

मेंटरिंग और फैसिलिटेशन स्किल्स; सामाजिक उत्तरदायित्व पर संस्थागत परामर्श; संस्थागत सुविधा; ऑनिंग कोर कम्पीटीशन और प्रमोशन कम्युनिटी एंगेजमेंट कार्यक्रमों के प्रमुख पहलू थे। एम.जी.एन.सी.आर.ई. की टीमों ने देश भर में स्वच्छता, जल संरक्षण (जल शक्ति), स्वच्छता और पोस्ट कोविड 19 स्वच्छता कार्य योजना के संदेश को फैलाने के लिए ऑनलाइन मोड में सफलतापूर्वक स्वच्छ कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

स्वच्छता कार्य योजना की रणनीतियाँ

- **पहल:** स्वच्छ राज्य वार और महामहिम परिचय वार और स्वच्छ राज्य के पहलुओं पर वार परिचयात्मक कार्यशालाओं की पहचान और उ.शि.सं. वार
- **मुख्यधारा:** हरियाली लेखा परीक्षा और वृक्षारोपण; जल लेखा परीक्षा और संरक्षण; ऊर्जा लेखा परीक्षा और संरक्षण; अपशिष्ट लेखा परीक्षा, कोई प्लास्टिक अभियान और अपशिष्ट प्रबंधन नहीं; जल संरक्षण (जल शक्ति), स्वच्छता, स्वच्छता, (स्वच्छ परिसर) और पोस्ट कोविड 19 स्वच्छता कार्य योजना
- उ.शि.सं. / विश्वविद्यालय के साथ **पहचान, निगरानी और संलग्न** करना (कार्य: उ.शि.सं. / विश्वविद्यालय)
- **ऑनलाइन मैकेनिज्म बनाएं** - डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन मीट का आयोजन
- **पुरस्कार और मान्यता - प्रमाण पत्र प्रदान करना -** एक स्वच्छ सस्थान होने के लिए मान्यता प्रमाण पत्र जारी करना और सर्वश्रेष्ठ **जिला स्वच्छ संस्थान** होने के लिए जिला स्तर पर प्रतियोगिता के लिए पात्र बनना।
- सोशल मीडिया के माध्यम से सर्वोत्तम प्रथाओं का दस्तावेजीकरण (कार्य: उ.शि.सं. / विश्वविद्यालय)
- कार्य योजना का ध्यान - कैम्पस और / या गोद लिया हुआ गाँव।

एफ.डी.पी. और कार्यशालाओं ने उ.शि.सं. में स्वच्छ कार्य योजना प्रकोष्ठों के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। ये एस.ए.पी. सेल स्वच्छ भारत के संदेश को कैंपस में फैलाने का काम जारी रखे हुए हैं। मंत्रालय ने भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के परिसरों में स्वच्छता और जल शक्ति को संभालने के लिए विकासशील आकाओं को एम.जी.एन.सी.आर.ई. को सौंपा है। इनमें से प्रत्येक एन.एस.एस. अधिकारी को अपने संस्थान को रोल मॉडल बनाना होगा और देश में कम से कम 10 परिसरों में स्वच्छता और जल शक्ति को बढ़ावा देना होगा। उनका एक कर्तव्य, उनके पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के अलावा, कैम्प्स और सर्विस एक्टिविटीज़ के माध्यम से छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा सीखने को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने एम.जी.एन.सी.आर.ई. को "छात्रों को बढ़ावा देने और सामाजिक उत्तरदायित्व" विषय पर छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए स्वयं मंच में मूक्स पाठ्यक्रम तैयार करने और चलाने का काम सौंपा है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. इस पाठ्यक्रम को विकसित करने पर पूर्ण रूप से काम कर रहा है।

छात्रों को मुख्य रूप से निम्न लाभ हैं:

1. सेवा और पहल का विकास करें।
2. सीखने और ज्ञान साझा करने का अवसर
3. आवश्यकता-आधारित प्रौद्योगिकी के नवाचारों और विकास के लिए स्कोप
4. जीवन कौशल, सॉफ्ट स्किल्स, व्यक्तित्व और चरित्र का विकास
5. संचार रणनीतियों की चुनौतियों और विकास को समझना

वे स्वयं में नैतिक मूल्यों को विकसित करेंगे समाज के लिए अपना योगदान देते हुए राष्ट्र के बेहतर नागरिक बनें। वे बाकी नागरिकों के लिए रोल मॉडल बन सकते हैं और जागरूकता फैला सकते हैं और दूसरों को बेहतर भविष्य के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे एक अच्छे कारण के लिए स्वयं को योगदान देने के लिए उ.शि.सं. या उच्च एजेंसियों से प्रेरणा और प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार और प्रशंसा जीत सकते हैं।

निकट भविष्य में स्वच्छता कार्य योजना को पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाएगा, छात्रों को अच्छा क्रेडिट मिल सकता है और समाज की भलाई के लिए काम करने के लिए जिम्मेदारी की भावना पैदा कर सकता है।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद ने एक दिवसीय कार्यशाला कोविड 19,और स्वच्छता एक्शन प्लान पर आयोजित की

सनीवर खान (गाजियाबाद) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद, हैदराबाद की जिला गाजियाबाद इकाई। कार्यशाला में सबका स्वागत करते हुए जिला समन्वयक डॉ प्रकाश चौधरी ने एम जी एन सी आर ई के उद्देश्यों के साथ स्वच्छता को अपनी आदतों में शामिल करने का आह्वान किया। उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि एम एम एच कॉलेज के प्राचार्य डॉ एम के जैन ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सेवा योजना चौधरी चरणसिंह विश्विद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक डॉ वीरेंद्र सिंह ने उद्घाटन करते हुए कहा कि ग्रामीण भारत के विकास से ही देश प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ेगा। मुख्य अतिथि का स्वागत डॉ अनिल कुमार दुबे, उप समन्वयक एम जी एन सी आर ई, ने किया।

दो सत्रों में आयोजित कार्यशाला में डॉ डी पी सिंह, महासचिव, फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन नई दिल्ली, ने कोविड 19–रोग प्रतिरोधक क्षमता और पर्यावरण के संबंध में अपने विचार रखे। प्रो. भुवन चन्द्र महापात्रा, मध्य प्रदेश भोज मुक्त विवि, भोपाल, ने स्वच्छता के आदतों और मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। डॉ आर पी एस पुंडीर ने एम जी एन सी आर ई के कार्यक्रम को ग्रामीण क्षेत्र में कार्यान्वित करने के मॉडल के स्वरूप को प्रतिभागियों के समक्ष रखा। डॉ भावना सिन्हा ने कोविड 19 के दौर में स्वच्छता और जल संरक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में जिला गाजियाबाद के विभिन्न महाविद्यालयों के लगभग 42 शिक्षकों ने हिस्सेदारी की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े कई कार्यक्रम अधिकारी शामिल रहे। कार्यशाला के अनुभवों को चिन्हित करते हुए एम जी एन सी आर ई के प्रादेशिक समन्वयक डॉ अनिल कुमार दुबे ने अपने वक्तव्य में उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षकों का ग्रामीण भारत के विकास के लिए आगे आने की महत्ता को रेखांकित किया। कार्यशाला का संचालन डॉ प्रकाश चौधरी ने किया। कार्यशाला में उपस्थित शिक्षकों में डॉ योगेंद्र, डॉ रेशमा माहेश्वरी, डॉ विशाल कुमार, डॉ अमिता सोलंकी, के के सिंह, डॉ डिम्पल बिज, डॉ रीमा उपाध्याय, डॉ अनुपमा, आरती सिंह, डॉ विक्रम अरोरा, डॉ शिवम, डॉ संजीव कुमार, डॉ संध्या शर्मा, डॉ नीलम सिंह, डॉ चंचिता सिंह, डॉ मनोज कुमार, डॉ प्रियंका, डॉ चेतना आदि रहे।

इसके अलावा, छात्रों को स्वच्छता कार्य योजना के माध्यम से रोजगार के नए अवसर मिल सकते हैं।

अपनी लचीली कार्यप्रणालियों के एक हिस्से के रूप में, एम.जी.एन.सी.आर.ई. प्रबंधन संकाय के लिए विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और उच्च शैक्षिक संस्थानों के लिए ऑनलाइन संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन (पी.एम.एम.एम.एन.एम.टी.टी.) के तहत यह एक है जो **प्रबंधन संकाय के लिए विशेष अवसर** उद्यमिता, विपणन, रणनीतिक प्रबंधन और प्रबंध संग्रह पर ध्यान देने के साथ केस चर्चा पद्धति के उपकरण और तकनीकों से खुद को लैस करता है।

ग्रामीण क्षेत्र ऐसे उत्पादन केंद्र हैं जो संपन्न आर्थिक गतिविधियों से परिपूर्ण हैं और यदि उनका पालन-पोषण सही तरीके से किया जाए, तो सभी निवासियों को उत्पादक व्यवसाय प्रदान करने वाले आत्मनिर्भर, स्व-शासित सामाजिक और आर्थिक वातावरण बन सकते हैं। **इस बदलाव को लाने के लिए केंद्रित कार्यबल के एक बड़े, प्रशिक्षित कैडर की जरूरत है।**

उद्यमिता, विपणन, रणनीतिक प्रबंधन और सामूहिक प्रबंध के लिए- संकाय विकास कार्यक्रम की आवश्यकता

केस चर्चा पद्धति समस्या समाधान में प्रशिक्षण के लिए एक आवश्यक अनुभवात्मक अधिगम पद्धति है। प्रबंधन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए केस चर्चा पद्धति विशेष रूप से ग्रामीण विपणन यहाँ प्रस्तावित है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, सामाजिक और अभिनव उद्यमों के माध्यम से विकास की व्यापक संभावना है। उच्च शिक्षा संस्थानों को लघु उद्योग और विपणन में योगदान करने की आवश्यकता है। बाजार लिंकेज के लिए आपूर्ति श्रृंखला और मूल्य श्रृंखला विकास के लिए सख्त आवश्यकता है और प्रौद्योगिकी विकास, माइक्रोफाइनेंस, आजीविका, कौशल विकास, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि प्रबंधन और बाजार लिंकेज और संरचनात्मक सहायता के क्षेत्रों में तकनीकी सहायता में दर्द बिंदुओं को संबोधित करना। एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ विकसित एक प्रबंधन कार्यक्रम आवश्यक ज्ञान प्रदान करने और छात्रों को छोटे और सूक्ष्म क्षेत्रों के सार्वजनिक और निजी डोमेन में उभरते और बढ़ते अवसरों का दोहन करने के लिए तैयार करने के लिए संकाय से लैस करता है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से पहचाने जाने वाले सूक्ष्म और छोटे उन्मुख पाठ्यक्रमों में रहता है जो प्रबंधन के सामान्य सिद्धांतों को आवरण करते हैं और मूल विषय छात्रों को बुनियादी विश्लेषणात्मक, निर्णय लेने और व्यक्तिगत कौशल प्रदान करते हैं।

केस चर्चा पद्धति एक निर्देशात्मक पद्धति है (सिद्धांत नहीं) जो उन स्थितियों के आधार पर निर्दिष्ट परिदृश्यों को संदर्भित करती है जिनमें छात्र अवलोकन, विश्लेषण, रिकॉर्ड, कार्यान्वयन, निष्कर्ष, सारांश या अनुशंसा करते हैं। केस स्टडीज का निर्माण और विश्लेषण और चर्चा के लिए एक उपकरण के रूप में किया जाता है।

रजिस्टर करें https://forms.gle/DoahR6YAVyL7LzCj6

'यह उस मामले को जीतने की इच्छाशक्ति नहीं है - जो सभी के पास है। यह उस मामले को जीतने की तैयारी करने की इच्छाशक्ति है' - 'पॉल' बीयर 'ब्रायंट (प्रसिद्ध फ़ुटबॉल कोच)

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद
(पुर्व में राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद)
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाघ, हैदराबाद, तेलंगाना – 500004
दूरभाष: 040-23212120, 23422105, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in , वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यू.जी.प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक
डॉ. टी. नागलक्ष्मी, सदस्य-सचिव, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित